The Knowledge Spectrum: An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3107-3557 (Online)

49

उत्तररामचरितम् नाटक में वर्णित प्रकृति की भावनाओं का दर्शन

Urvish Pankajkumar Gandhi
PG Student (MA Sanskrit)
School of Languages, Gujarat University Ahmedabad, Gujarat

सारांश :

पंचमहाभूतों को पूजने वाली सनातन भारतीय संस्कृति से आज जब पंचमहाभूतों को बचाने की बात आधुनिक भारतीय समाज में आ पड़ी है, तब भास, कालिदास, भवभूति जैसे संस्कृत साहित्यकार की याद आती है, जिन्होंने न सिर्फ इंसानों का, बल्कि प्रकृति का भी जीवित स्वरूप में अपने रूपकों में साक्षात्कार किया था। इस शोधपत्र के जरिए ऐसे ही एक श्रीकण्ठपदलांछनो भवभूतिर्नाम से प्रख्यात संस्कृत साहित्यकार के रूपक उत्तररामचरितम् में किए गए प्रकृति चित्रण के द्वारा समाज को प्रकृति के अंदर समाहित प्रेम, करुणा इत्यादि भावनाओं का दर्शन कराने का प्रयास किया गया है। करुण रस प्रधान नाटक में लोकोपवाद और धर्म के मध्य संतुलन बनाते हुए भी कवि ने इस रूपक में प्रकृति की संवेदनात्मक भावनाओं का जीवंत चित्रण करके अपनी परिणत प्रज्ञा का श्रेष्ठ स्वरूप समाज को दिया है।

कूटशब्द :

प्रकृति, समाज, साहित्य – रूपक (नाटक)।

शोध का उद्देश्य :

प्रकृति की भावनाओं से समाज को अवगत कर प्रकृति संरक्षण के प्रति जागरूकता लाना।

शोधविधि :

साहित्यिक अभ्यास द्वारा प्रकृति की भावनाओं का दर्शन।

प्रस्तावना :

संस्कृत साहित्य विश्वको मिली विशिष्ट धरोहर समान है। जो कि न सिर्फ मन को प्रफुल्लित करती है, बल्कि समाज को और समाज के सभी जाति, वर्ग, समुदाय, लिंग इत्यादि के भेद के बिना जोड़े रखते हुए महत्त्वपूर्ण संदेश भी देता है और यह संदेश भी न सिर्फ मनुष्यों के लिए बल्कि संपूर्ण सृष्टि के लिए हितकारक उपदेश समान रहता है। संस्कृत साहित्य की बात करें तो ये वो खजाना है जिसके केवल एक महाकाव्य महाभारत के बारे में कहा गया है कि यन्न भारते तन्न भारते व्यासोच्छिष्टं जगत् सर्वम्। अर्थात् जो महाभारत में नहीं है, वह अन्यत्र नहीं है। इसी तरह संपूर्ण संस्कृत साहित्य विद्वानों से भरा हुआ है और सभी साहित्यग्रंथ हमें कुछ न कुछ सीख अवश्य देते ही है। जरूरत है तो बस उसे साहित्य की तरह नहीं, बल्कि उसके अंदर छिपे रहस्यमय संदेश को ग्रहण करने की।

सृष्टि को पूजने वाली सनातन संस्कृति से आधुनिक युग तक पहुँचा हुआ आधुनिक मानवी आज एक तरफ जल बचाओ, जल ही जीवन है का रोना रोने की तादार पर आ खड़ा है तो दूसरी तरफ वायु प्रदूषण से भी दुखी है। तब सच में याद आती है सदियों नहीं शायद युगों पुरानी उस सनातन संस्कृति की, जो पूजती थी अग्नि, वायु, आकाश, जल और पृथ्वी इन पंच महाभूतों को। इसीलिए त्रेतायुग के श्री राम के जीवन पर आधारित महाकवि भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् नाटक में कवि द्वारा प्रदर्शित प्रकृति प्रेम को समाज तक पहुंचाने का प्रयास आज इस कलयुग में इस शोधपत्र द्वारा मैं करने जा रहा हूं।

विवेचन :

एको रस: करुण एव निमित्त भेदाद्विन्नः पृथक्पृथगिवाश्रयते विवर्तान्।
आवर्तबुद्बुदतरंगमयान्विकारानम्भो यथा सलिलमेव तु तत्समग्रम्॥

करुण ही एकमात्र रस को स्वीकारते हुए भवभूति संस्कृत साहित्य का वो नायब हीरा है, जो कि प्रकृति को भी अपनी साहित्यकला के करुण्य से रुलाने का सामर्थ्य रखता है। वैसे तो सात अंकों (२५६ श्लोक) में निर्मित विदूषक रहित यह रूपक विभिन्न १९ छन्दों में सभी ३० पात्रों में करुण रस को प्रस्तुत करता है। लेकिन यहां हम केवल उनमें कवि द्वारा निर्मित प्रकृति के अंदर रही हुई भावनाओं के दर्शन का संक्षिप्त प्रयास किया है।

1. चित्रदर्शन (५१ श्लोक) :

प्रथमांक में कवि ने वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड की घटनाओं की ओर आगे बढ़ने से पूर्व रामायण की कथा बताने के लिए रची चित्रवीथि की उत्तम योजना का प्रयोग किया है। यहाँ कविने केवल मानवी भावनाओं को प्रस्तुत किया है।

2. पंचवटी प्रवेश (३० श्लोक) :

वासन्ती - (सभयम् स्वगतम्) कथं नामशेषामित्याह। (प्रकाशम्) आर्ये कीमत्याहितं सीतादेव्या:।
आत्रेयी - न केवलमत्याहितम्, सापवादमपि। (कर्णे) एवमेवम्।
वासन्ती - अहह दारुणो दैवनिर्घात:। (इति मूर्च्छति।)

द्वितीयांक में कवि मानव स्वरूप में श्री राम को प्रकृति के करीब ले जाने की भूमिका स्वरूप शंबूक वध के प्रसंग के लिए रामभद्रका पंचवटी में प्रवेश कराते हैं। यहाँ वनदेवता वासन्ती का पात्र निरूपण कवि की मौलिक कल्पना है। जिसमें कवि ने वनदेवता को भी मनुष्य की तरह भय से मूर्छित होना, रोना, भावुक होना, प्रेम, स्नेह इत्यादि भावनाओं युक्त दर्शाया है।

वासन्ती - (सस्नेहकौतुकास्रम्) कुमार लक्ष्मणस्यापि पुत्र:। हन्त मातर्, जीवामि।

3. छायाङ्क (४८ श्लोक) :

उत्तररामचरितम् नाटक के हृदय समान यह तृतीयांक नाटक के सुखांत पूर्णाहुतिमें काफी महत्त्वपूर्ण ऐसी सीता की छाया (अदृश्य वैसी) की कविकल्पना से भरा हुआ होने की वजह से इसे छायाङ्क कहा गया है। इस अंक में कवि ने प्रकृति की भावनाओं का सहृदय वर्णन किया है। एक ओर तमसा, मुरला और छाया सीता के संवाद तो दूसरी ओर वनदेवता वासन्ती और रामभद्र के संवाद से यह अंक संपूर्ण नाटक को अत्यंत भावनात्मक रूप देने में सफल हुआ है।

मुरला (नदी) - सखि तमसे, प्रेषितास्मि भगवतोऽगस्त्यस्य पत्न्या लोपामुद्रया सरिद्वरां गोदावरीमभिधातुम्, जानास्येव यथा वधूपरित्यागात्प्रभृति-

यहाँ कवि तमसा और मुरला नदियों के बीच संवाद को प्रदर्शित करते हुए बताया है कि नदी मुरला को अगत्स्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा द्वारा नदियों में श्रेष्ठ वैसी गोदावरी नदी को संदेश देने भेजा गया है। जिसमें मनुष्यों का नदी के प्रति व्यवहार भी प्रदर्शित होता है और प्रकृति की भावनाओं का भी प्रदर्शन हुआ है।

तमसा (नदी) - इदानीं तु शम्बूकवृत्तान्तेन सम्भावितजनस्थानागमनं रामभद्रं सरयूमुखादुपश्रुत्य भगवती भागीरथी यदेव भगवत्या लोपामुद्रया स्नेहादाशङ्कितं तदेवाशङ्क्य सीतासमेता केनचिदिव गृहाचारव्यपदेशेन गोदावरीं विलोकयितुमागता।

सरयू नदी और लोपामुद्रा के बीच का संवाद जिसमें रामभद्र के जनस्थान में आने की संभावना की बात भी मनुष्यों का प्रकृति से मिलनसार संबंध दर्शाता है।

तमसा - (सस्नेहास्त्रम्) अयि वत्से,

अपरिस्फुटनिस्वाने कुतस्त्येऽपि त्वमीदृशी। स्तनयित्नोर्मयूरीव चकितोत्कण्ठितं स्थिता॥

सीता - भगवति, किं भणस्यपरिस्फुटेति। स्वरसंयोगेन प्रत्यभिजानामि नन्वार्यपुत्रेणैवैतद् व्याहृतम्।

मूर्छा से बाहर आई हुई छाया सीता को अपनी पुत्री की तरह संभालते हुए स्नेह पूर्वक तमसा नदी का संवाद वास्तव में मानवजीवन के जतन में प्रकृति प्रेम को दर्शाता है।

सीता - भगवति तमसे, एतेनापत्यसंस्मरणेनोच्छ्वसितप्रस्नुतस्तनी वत्सयोश्च पितुः संनिधानेन क्षणमात्रं संसारिण्यस्मि संवृत्ता।

तमसा - किमत्रोच्यते। प्रसवः खलु प्रकर्षपर्यन्तः स्नेहस्य। परं चैतदन्योन्यसंश्लेषणं पित्रोः।

अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्।

आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति बध्यते॥

आगे पुत्र के प्रति प्रेमभाव से छायासीता के संवाद: "अपनी संतानों के स्मरण मात्र से गिले हुए स्तनों वाली में, अभी उनके पिता के सामने होते हुए एक क्षण के लिए तो मैं भी फिर से संसारिणी बन गई हूँ।" के उत्तर में (श्लोक ३/१७ में) तमसा द्वारा "बच्चों को वास्तव में स्नेह के प्रकर्ष की पराकाष्ठा के साथ साथ माता पिता को जोड़े रखने वाला परमतत्व बताना" भी वास्तविकता में पुरुष प्रकृति के दार्शनिक विचार का भावनात्मक संयोग है।

4. कौशल्या जनक योग (२९ श्लोक) :

('युज' {Yuj} मूल धातु से उत्पन्न योग अर्थात् मिलना, जुड़ना)

कौशल्या और जनक का मिलन / योग।

शोक और संवेदना से भरे इस चतुर्थ अंक में कौशल्या का जनक से मिलना एवं सीतात्याग और राम की धर्मसंकट वाली दुःख सभर अवस्था के बारे में संवाद है। साथ ही यहां अश्वमेध यज्ञ के घोड़े का भी वर्णन देखने को मिलता है।

5. कुमार - विक्रम (३५ श्लोक) :

कुमार (लव - चंद्रकेतु) के बीच के संवाद और युद्ध के वर्णन वाला यह अंक करुणरस के बीच में वीररस की झांकी दे जाता है। यहां प्रकृति प्रेम का प्रदर्शन तो है लेकिन प्रकृति का जीवंत स्वरूप में यहां वर्णन नहीं है।

6. कुमार - प्रत्यभिज्ञान (४२ श्लोक) :

कुमार (लव, कुश) प्रति' (पुनः/फिर) + 'अभि' (निकट/सामने) + 'ज्ञा' (जानना/ज्ञान) + 'ल्युट्' (कृत् प्रत्यय)।

इस पंचम अंक में रामभद्र का लव-कुश से मिलन व उन्हें फिर से पहचानने का वर्णन है। कवि द्वारा किया गया पिता का पुत्रों से मिलन का यह मौलिक काल्पनिक दर्शन सभी रामभक्तो के लिए अत्यंत भावुक है।

7. सम्मेलन (२१ श्लोक) :

गर्भांक सभर यह सप्तम अंक कवि की कल्पना की पराकाष्ठा के साथ नाटक को सुखांत की ओर ले जाता है।

पृथिवी - (आश्वस्य) देवि, सीतां प्रसूय कथामाश्वसिमि।

एकश्चिरं राक्षसमध्यवास-स्त्यागो द्वितीयस्तु सुदुःसहोऽस्याः।

भागीरथी - को नाम पाकाभिमुखस्य जन्तु-द्वराणि दैवस्य पिधातुमीष्टे॥

पृथिवी - भगवति भागीरथि, युक्तमेतत्सर्वं, न वो रामभद्रस्य।

न प्रमाणीकृतः पाणिर्बाल्ये बालेन पीडितः।

नाहं न जनको नाग्निर्नानुवृत्तिर्न संततिः॥

गर्भांक में रामभद्र द्वारा छोड़े जाने के बाद देवी सीता का खुद को गंगा नदी में समाहित करने की घटना के आगे माता पृथ्वी (धरती) और भागीरथी (गंगा) द्वारा सीता का प्रसव और संसार के शरीर रूप वसुंधरा की अपने जमाई रामभद्र के प्रति नाराजगी, सीता का राम के लिए विलाप, माता पृथिवी से अपने अंदर समा लेने की विनती और भागीरथी का सीता को हजारों वर्षों तक जीवंत रहने के आशीर्वाद सच में इतने कारुण्य से भरे हुए है कि जैसे धरती अथवा नदी स्वरूप प्रकृति भी साक्षात मनुष्य स्वरूप लेकर अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति कर रहे हो। यह केवल भवभूति ही कर सकते हैं और शायद इसीलिए तो कहते हैं कि "कारुण्यं भवभूतिरेव तनुते"।

सीता- (रुदती कृताञ्जलिः) नयतु मामात्मनोऽङ्गेषु विलयमम्बा।

भागीरथी- शान्तम्। अविलीना संवत्सरसहस्राणि भूयाः।

पृथिवी- वत्से, अवेक्षणीयौ ते पुत्रकौ।

निष्कर्ष :

आज जब आधुनिक समाज कुदरत से दूर हो चुका है, तब प्रकृति के ऐसे अनेकविध भावुक संवादों से, या यूं कहें कि प्रकृति की भावनाओं से भरा हुआ महाकवि भवभूति का यह संपूर्ण उत्तररामचरितम् प्रकृति की संवेदनाओं की

वास्तविक अनुभूति कराता है। जो कि अन्ततः आधुनिक समाज को प्रकृति की गोद में जीने की प्रेरणा देता है। आदिमानव से मनुष्य सामाजिक प्राणी बना। और आज वही एक जमाने का आदिमानव आधुनिक मानवी बनकर प्रकृति विरुद्ध के कर्मों से प्रकृति, पशु, पक्षी, हवा, पानी और संपूर्ण सृष्टि का जब शत्रु बन गया है, तब वास्तव में इस आधुनिक मानव को प्रकृति प्रेमी बनने की अत्यधिक आवश्यकता आन पड़ी है। इसे आज इस युग में भी और हमेशा सभी युगों में धरती को माता तथा नदी और संपूर्ण प्रकृति को, सभी पंच महाभूतों को अपने और सृष्टि के मित्र मानकर उसका जतन करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची :

1. त्रिपाठी, ब., (२०१६), उत्तररामचरितम्, आगरा: महालक्ष्मी प्रकाशन।
2. त्रिपाठी, र., (न.द.), उत्तररामचरित, वाराणसी: चैखम्बा कृष्णदास अकादमी।
3. द्विवेदी, क., (१९८९), उत्तररामचरितम् भवभूति, इलाहाबाद: रामनारायण लाल विजय कुमार।
4. द्विवेदी, श., (२०१०), महाकवि भवभूतिविरचितम् उत्तररामचरितम्, जयपुर: हंसा प्रकाशन।
5. धनन्जय. (१९९४), दशरूपकम् (८वां सं.), मेरठ: साहित्य भण्डार।
6. धनंजय, आ. (२०१५), दशरूपक (२रा सं.), मेरठ: साहित्य भंडार।
7. पाण्डेय, र. (२०१५), उत्तररामचरितम्, आगरा: महालक्ष्मी प्रकाशन।
8. भवभूति, म. (२०२३), उत्तररामचरितम्. अमदाबाद: सरस्वती पुस्तक भंडार।
9. राय, डी. एल., & पाण्डेय, र. (१९५६), कलिदास एवं भवभूति. बम्बई।
10. राय, श. (१९४९), उत्तररामचरितम्, कलकत्ता।
11. रामचन्द्र गुणचन्द्र, (१९९०), नाट्य-दर्पण, दिल्ली: दिल्ली विश्वविद्यालय।
12. व्यास, भ. (२०१३), दशरूपक, वाराणसी: चौखम्भा सुरभरती प्रकाशन।